that there is a prior application for the area from a private party. The Corporation have taken up the matter with the State Government.

International Conference on Vietnam

5299. SHRI K. M. MADHUKAR: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Amnesty International had urged the International Conference on Vietnam to place the civilian prisoners in South Vietnam under United Nation's protection pending their ultimate release.

(b) whether the recently held Paris Conference on Vietnam had discussed this suggestion; and

(c) if so, the decision taken by the Conference in this respect and India's views on the subject?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH): (a) to (c). The Government are not aware of any such move or of any discussion thereof at the Paris Conference. Neither the Paris Agreement nor the Final Act signed at the end of the Paris Conference makes any reference to it.

12.00 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

REPORTED DEAL FOR SUPPLY OF NAVAL BOATS FITTED WITH 'KOMAR' MISSILES BY U.S.S.R. TO PAKISTAN

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर विदेश मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

"सोवियत संघ द्वारा पाकिस्तान को 'कोमार' प्रक्षेपणास्त्रों से युक्त नौसैनिक नौकायें सप्लाई करने के कथित सौदे तथा पाकिस्तान को अस्त्रास्त्रों की सप्लाई पर लगी हुई रोक हटा देने के सोवियत संघ के निर्णय का समाचार।"

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SWARAN SINGH): Honourable Members will recall that on July 6, 1971 I made a statement in the House to the effect that the Soviet Ambassador had told us that the Press reports about the USSR Government having supplied arms to Pakistan after the Pakistan military repression in Bangladesh were incorrect. Since then, in the spirit of the Indo-Soviet Treaty of Peace, Friendship and Co-operation, we have been in close touch with the Soviet Union. If there had been any charge in the policy of the USSR Government, we are confident that they would certainly have informed us.

When this news-item came to Government's notice, a check was made with the USSR Embassy. We have been informed that there is no basis whatsoever for this report.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यह ध्यान दिलाओं सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित खबर के आधार पर दी गई थी।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (अलीपुर) : केवल एक अखबार।

श्री एस० एम० बनर्जी (कानपुर) : बिड़ला का अखबार "हिन्दुस्तान"।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यह समाचार एक संवाद समिति ने प्रसारित किया है। वह संवाद समिति एक जिम्मेदार संवाद समिति है। उसके द्वारा प्रकाशित समाचार का एक अंश मैं आपके द्वारा सदन के सन्मुख रखना चाहता हूं।

एक माननीय सदस्य : संवाद समिति का नाम बताइये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : भारती। समाचार इस प्रकार है :

"जानकार सूत्रों के अनुसार सोवियत संघ ने पाकिस्तान को हथियारों की सप्लाई से प्रतिबन्ध ढीला कर दिया है। इस्लामाबाद रूस के साथ

श्री अटल बिहारी वाजपेयी :

'कोमार' किस्म की प्रक्षेपास्त्र युक्त नौसैनिक नौकाओं की खरीद के लिये वार्ता कर रहा है। वार्ता काफी आगे बढ़ चुकी है। उक्त सूत्रों का कहना है कि दोनों देशों के बीच इसके लिये सौदा भी हो गया है। । सरकार इस बारे में तथ्य एकत्र कर रही है।"

आगे यह भी कहा गया है :

"पाकिस्तानी नौसेवा के पास अभी तक ऐसी नौकायें नहीं हैं। सोवियत संघ ने भारत-पाक युद्ध मे पूर्व पाकिस्तान को हथियारों की सप्लाई पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। वैसे रूस यह नौकायें अनेक देशों को बेच रहा है।

पाकिस्तान के एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में अपनी मास्को यात्रा के दौरान इस बारे में वार्ता की थी।"

विदेश मंत्री ने जो वक्तव्य दिया है, उसमें इस समाचार का खंडन किया गया है और उससे इस सदन को सन्तोष होना स्वाभाविक है। सोवियत रूस जिन तीसरे देशों को हथियार दे रहा है, उसमें ईरान शामिल है। क्या सरकार ने इस बात का प्रबन्ध कर लिया है कि सोवियत रूस से ईरान को मिलने वाले हथियार पाकिस्तान में न पहुंचें ? जब इस तरह की बात अमरीका के सम्बन्ध में आई थी, तो सदन में आशंकायें व्यक्त की गई थीं। सरकार ने ईरान की सरकार से सम्पर्क स्थापित करके इस सदन को आश्वस्त करने का प्रयत्न भी किया—यद्यपि हमारा उस पर विश्वास नहीं हुआ—कि वे हथियार पाकिस्तान में नहीं पहुंचेंगे।

मैं चाहता हूं कि मंत्री महोदय या तो इस समाचार की पुष्टि करें और या खंडन करें कि क्या सोवियत रूस ने ईरान को हथियार दिये थे। क्या यह सच है कि ईरान के शाह जब कुछ दिनों पहले मास्को गये थे, तो वहां ईरान को शास्त्रों की सप्लाई के बारे में एक समझौता हुआ था। ईरान को न केवल ये नौकायें मिली हैं, बल्कि और भी शस्त्र रूस से प्राप्त हुये हैं। विदेश मंत्री स्वीकार करेंगे कि भारत और रूस की जो संधि हुई है उसके अन्तर्गत रूस ईरान को इस बात की इजाजत नहीं दे सकता है कि वे हथियार पाकिस्तान में पहुंचें। लेकिन अगर इस बारे में भारत सरकार के पास कोई जानकारी है, तो मंत्री के महोदय उसको सदन के सामने रखने का प्रयत्न करें।

विदेश मंत्री ने कहा है कि बंगलादेश की घटनाओं के बाद हमारे और सोवियत रूस के बीच जो मित्रता की संधि हुई, उसके पश्चात हम सोवियत रूस के साथ निरन्तर विचार विनिमय करते रहे हैं। हम चाहते हैं कि सोवियत रूस के साथ हमारे सम्बन्ध मजबूत हों और हमारे सम्बन्धों का आधार एक दूसरे के प्रति मित्रता और समादार की भावना हो। प्रश्न यह है कि जबसे अमरीका ने पाकिस्तान को हथियार देना शुरू करने का निर्णय लिया है, तब से इस भूखंड की स्थिति में एक गुणात्मक परिवर्तन हुआ है। इससे तनाव बढ़ने की आशंका है। क्या इस नई परिस्थिति के बारे में सोवियत रूस से हमारी सरकार ने विचार-विमर्श विनिमय किया है ?

कुछ दिनों पहले सोवियत रूस के प्रवक्ता का वक्तव्य भारत के समाचारपत्रों में छपा था, जिसमें पाकिस्तान के राष्ट्रपति की बड़ी प्रशंसा की गई थी और कहा गया था कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति तनाव कम करना चाहते हैं। अमरीका से हथियार प्राप्त करना तनाव कम करने का तरीका नहीं हो सकता है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इस सम्बन्ध में मास्को से हमारा कोई विचार-विनिमय हुआ है। मैं यह भी जानना चाहता हूं कि इस रिपोर्ट के बारे में जहां हमने नयी दिल्ली स्थित सोवियत राजदूत

से चर्चा की है, वहां क्या हमने मास्को स्थित भारतीय दूतावास से भी चर्चा की है और इस सम्बंध में उसका क्या कहना है।

SHRI SWARAN SINGH: Sir, the hon. Member has put questions which do not arise out of the present question. I will confine myself only to those parts which arise out of the present question.

So far as Iran's effort to get military equipment is concerned, the main supplier of Iran is the United States of America. Iran is a member of CENTO. Pakistan, Iran and Turkey are members of CENTO and CENTO has the backing of the United States of America. Iran has been getting a major part of its supplies from USA and from Western sources. Recently, Iran has entered into contracts with USA for purchase of a very large quantity of highly sophisticated military equipment. It is true that Iran also purchaed some equipment from USSR. Whereas we have some information that military equipment of USA origin with Iran did find its way to Pakistan, our Intelligence, our information, does not show that any equipment with Iran of USSR origin found its way to Pakistan....

SHRI JAGANNATH RAO JOSHI (Shajapur): They were found in the Iraq Embassy.

SHRI SWARAN SINGH: Is he speaking on behalf of Iraq or what? I am glad the Jana Sangh is taking more interest in Iraq.

A further question has been asked whether the supply of arms by the United States of America to Pakistan has not introduced a new factor in the situation of the Indian sub-continent. I agree. I have made a statement to this effect on the floor of the House.

We have not discussed this matter yet with the Government of USSR. This was the precise information that he asked.

Lastly, he asked whether, apart from our asking the USSR Embassy in Delhi, our Ambassador or our Mission in Moscow also got in touch with the Government of Moscow. I would like to say that when we talk to the USSR Embassy here, we talk to the Government of USSR because their Embassador here and their Mission represent the Government.

This Call Attention Notice was tabled only yesterday. This news did appear in only one newspaper in the whole country. I must confess that this news-item had not come to my notice till I received the Call Attention Notice yesterday. (*Interruption*) I must confess I do not read all the newspapers nor do I intend to change my habit. Therefore, the best way to give answer to the Call Attention Notice was to get information from the USSR Embassy. I have no doubt that if we had contacted Moscow, Moscow would have given the same reply because the USSR Embassy officials in Delhi cannot give a reply to us which does not reflect the attitude of the Government of USSR.

श्री ग्रग्नेश (फिरोजाबाद) : अध्यक्ष महोदय, हम लोगों को इस प्रकार की आशा नहीं थी कि रशिया इस प्रकार का कोई आर्म्स भेजने का समझौता पाकिस्तान के साथ करेगा। आज मन्त्री महोदय के बयान से यह स्पष्ट हो गया और जैसी हमारी आशा थी वैसा ही निकला। परन्तु एक प्रश्न आता है कि क्या वजह है कि कुछ देश जैसे फ्रांस इस समय मिराज वगैरह पाकिस्तान को सप्लाई कर रहा है और जार्डन ईराक, सऊदी अरेबिया और ईरान आज भी हिन्दुस्तान के प्रति ऐसा विपरीत रुख अपनाए हुए हैं ? क्या कुछ कमी है हमारी विदेश नीति में यह एक सोचने की बात है। मैं चाहूंगा कि मन्त्री महोदय, इस के बारे में कुछ स्पस्टीकरण करें कि ऐसी क्या हमारी विदेश

[श्री अम्बेश]

नीति में कमी या खामी है, या कौन से ऐसे कारण हैं कि जिससे ये देश इन परिस्थितियों के बाद भी पाकिस्तान को हथियार की सप्लाई आज भी जोरों के साथ कर रहे हैं ?

SHRI SWARAN SINGH: I have not answered on behalf of other countries. Some countries will be friendly to Pakistan. Some will be very close and friendly to us. That is part of international life and we should learn to live with it.

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : अध्यक्ष महोदय, जैसा कि कल समाचार पत्रों में आया था उससे केवल सदस्यों को ही नहीं, मुझे ही नहीं, बल्कि जिन्होंने भी अखबार पढ़ा होगा उन्हें स्वाभाविक रूप से चिन्ता हुई होगी। मुझे इस बात से खुशी है कि आज विदेश मन्त्री ने अपना बयान दिया तो आज भी और कल भी जब लोग अखबार पढ़ेंगे तो उन्हें काफी सन्तोष होगा। क्योंकि समाचार को पढ़ने के बाद मैं इस बात को कहूं कि यह बड़े ही आश्चर्य की बात थी, विश्वास की बात नहीं थी। लेकिन साथ साथ मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा, जैसा कि विदेश मन्त्री जी ने कहा कि यहां सोवियत संघ के दूतावास से उन्होंने बात की, उनसे पता चला कि इस समाचार में कोई भी तथ्य नहीं है, मैं जानना चाहता हूं कि विदेश मन्त्री महोदय से कि क्या अपना जो दूतावास मास्को में है उससे भी उन्होंने इस सम्बन्ध में कोई जानकारी ली है और वह जानकारी आप दे सकेंगे ?

दूसरी बात मैं यह जानना चाहूंगा, हमारे मित्र ने ठीक कहा, क्या हमारी विदेश नीति में कहीं कोई त्रुटि तो नहीं हो रही है जिसके कारण कहीं न कहीं हम कुछ फंसते जा रहे हैं।

जब हमने 9 अगस्त को 12 लाख जनता के सामने घोषणा की थी उस सन्धि की तो 55 करोड़ जनता ने बड़े ही सुख और सन्तोष की सांस ली थी। मैं कहना चाहता हूं कि रूस के साथ हमारा जो सम्बन्ध रहा है वह केवल मंत्री का ही नहीं बल्कि भाईचारे का सम्बन्ध है। उसमें कोई दाग नहीं आना चाहिए। और अगर कोई शक्ति उसमें दाग लगाना चाहे तो उसे हम करारा जवाब दें। बहुत सी ऐसी शक्तियां हैं दुनिया में जो चाहती हैं कि हमारी दोस्ती में किसी तरह का खलल डालें। तो हमें उनको भी जवाब देना है और जब तब इस प्रकार का समाचार आ जाय तो उसका भी खंडन होना बहुत जरूरी है।

मै विदेश मन्त्री महोदय से एक बात और जानना चाहूंगा कि क्या दुनिया के अन्य देशों में जो हमारे दूतावास हैं वह सब एलर्ट हैं या नहीं। यह एक कुचक्र चल रहा है पाकिस्तान का, अभी भी उसकी सैनिक तैयारी चल रही है, भले ही उनके मित्र एक पुस्तक लिख दें, जुल्फी माई फ्रेंड के लेखक ने भुट्टो की बड़ी तारीफ की है, लेकिन केवल उससे हम इत्मीनान की सांस नहीं ले सकते ।

दूसरी बात मैं यह भी कह देता हूं कि हमारे विरोधी दल के मित्रगण जिस तरह से शंक और शंका की दृष्टि से हर चीज को देखते हैं हम वैसा नहीं देखते। हम चाहेंगे, विदेश मन्त्री ने जिस तरह से इस समाचार का खंडन किया है, उसी आवाज में उसी बुलन्दी के साथ इस बात को भी कहें कि अगर किसी तरह से किसी देश ने पाकिस्तान को किसी तरह की मदद की तो उसका भी हम सामना करने के लिए तैयार हैं।

SHRI SWARAN SINGH: About the first question, I have already explained that the time was too short for us to get in touch with our Mission in Moscow to get clarification from the Government of USSR. Of course, we will make a second check also.

About the rest, I can only say that I respect the sentiments so forcefully expressed by my friend.

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : उन्होंने कहा है कि आप भी कुछ कीजिए।

श्री स्वर्न सिंह : उनकी आवाज के साथ मेरी आवाज है।

श्री राम रतन शर्मा (बांदा) : अध्यक्ष महोदय, मन्त्री महोदय के वक्तव्य से कुछ सन्तोष होता है। अभी उन्होंने माना है कि ईरान को रूस से कुछ हथियार मिले हैं। मैं मन्त्री महोदय से जानना चाहता हूं कि ईरान को रूस से जो हथियार मिले हैं क्या उनमें ये नेवल-बोट्स फिटेड विद् कोमार मिसाइल्ज भी शामिल हैं ?

दूसरा प्रश्न : ईरान को रूस से जो हथियार मिले हैं और अमरीका से जो हथियार मिले हैं, उनमें किस देश के हथियारों की संख्या अधिक है और पाकिस्तान को ईरान से जो शस्त्रास्त्र दिये गये हैं उनमें किस देश के हथियारों की संख्या अधिक है ?

SHRI SWARAN SINGH: From the matter of supply of arms to Pakistan now the hon. Member has gone to Iran. I cannot answer all these questions....

SHRI PILOO MODY (Godhra): That was a slip of the tongue. He meant Pakistan.

SHRI SWARAN SINGH: Therefore, so far as our information goes, as I have said, Iran is getting supplies principally from the United States and western sources. It is true and we must not forget that Iran is a neighbour of USSR. Iran has got some military equipment from USSR also....

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Including these boats?

SHRI SWARAN SINGH: I cannot say that. I have not got the details. But this type of boats ......

SHRI G. VISWANATHAN (Wandiwash): Which country gave more—that was his question.

SHRI SWARAN SINGH: This type of boat, I think, in a peculiarily of USSR. This type of boat with this type of missile fitted on it as mentioned in this news item is not normally available from the USA or from Western Europe. China is the only other country which has got similar boats and we got some information sometime back that the Chinese had supplied some such boats to Pakistan, but we could not verify the exact number, etc.

श्री राम रतन शर्मा : मैं शायद अपने सवाल को स्पष्ट नहीं कर सका। मैं पूछना चाहता हूं कि 1965 से आज तक पाकिस्तान को यू० एस० एस० आर० ने ज्यादा हथियार दिये हैं या अमरीका ने।

SHRI SWARAN SINGH: It does not arise out of this at all.... (*Interruptions*) I am not going to answer all these questions.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: On a point of order, Sir.

MR. SPEAKER: It does not arise.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: How do you say that? You have to convince the House.

MR. SPEAKER: Your question is very specific: "reported deal for supply of naval boats fitted with 'Komar' missiles".

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: And other arms.

MR. SPEAKER: Where had you mentioned it? (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Mr. Piloo Mody, I am not allowing you.